अहिंसा से संभव है विश्व शांतिः आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अहिंसा के माध्यम से दिलाई थी आजादी, सूक्ष्म हिंसा से दूर रहने की हिदायत दी, अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का समापन

केलवाः 2 अक्टूबर

आचार्यश्री महाश्रमण ने विभिन्न देशों में परस्पर भाईचारा बनाए रखने की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि इससे हम विश्व शांति और बंधुत्व की भावना कायम रख सकते है। सूक्ष्म हिंसा से दूर रहने की हिदायत देते हुए कहा कि व्यवहार में अहिंसा का भाव हो तो उसकी मूर्ति मन मंदिर में विद्यमान कर सकते है। तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता आचार्य ने उक्त विचार यहां तेरापंथ समवसरण में रविवार को अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के समापन पर अंतिम दिन अहिंसा दिवस के अवसर पर उपस्थित श्रावक समाज को संबोधित करते व्यक्त किए।

उन्होंने संबोधि के पांचवें अध्याय में उल्लेखित आत्मा के गुणों की व्याख्या करते हुए कहा कि अहिंसा के माध्यम से आत्मा के गुणों की रक्षा करने से शांति की अनुभूति होती है। अहिंसा का यह शब्द हालांकि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आजादी के आंदोलन से जुडा हुआ है, लेकिन भगवान महावीर ने इसे देशभर में फैलाया था। बापू के नाम से प्रसिद्ध गांधी ने अहिंसा का सूत्र अपनाने से पूर्व कई तरह के प्रयोग जीवन में किए, लेकिन हिंसा से लडने की शक्ति उन्हें अहिंसा के माध्यम से ही मिली। व्यक्ति को आवेश में आने और गुस्सा करने की बजाय हर समस्या का समाधान शांति और अहिंसा के माध्यम से खोजने का प्रयास करना चाहिए। व्यक्ति को अपना चित्त शांत रखने की आवश्यकता है। हमारी दुर्बलता से गुस्से और आवेश की भावना का प्रादुर्भाव होता है। ऐसे में हम स्वयं तो परेशान होते ही है। साथ ही दूसरों को कठिनाईयों में धकेलने का प्रयास करते है। उन्होंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति गलत वक्तव्यों का उच्चारण करता है और हिंसा करने की चेष्टा करता है तो पलटकर जवाब देने की बजाय मुस्कुराकर उसकी बातों को स्वीकार करने का प्रयास करें, तभी जीवन में अहिंसा और शांति का माहौल बना रह सकता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने जीवन में कितने की प्रयोग किए और संयम–साधना करते हुए देश की सेवा की तथा राष्ट्रपिता बने। आजादी के बाद देश में कितने ही राष्ट्रपति अवश्य बन गए, लेकिन राष्ट्रपिता ओर कोई नहीं बन पाया। उन्होंने हिंसा के कारणों को परिभाषित करते हुए कहा कि

अभाव, अज्ञानता, गरीबी और मोह के कारण समाज में हिंसा बढती है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ भी कहते थे कि देश में सबकुछ हो, लेकिन भूखमरी न हो। कोई परिवार भूखा नहीं रहे। इस दिशा में व्यापक प्रयास करने की आवश्यकता है। उन्होंने व्यक्ति में यदा कदा आने वाले आवेश को भी हिंसा का एक प्रमुख कारण बताया। इसे निवादित करने का प्रयास किया जाए तो समाज, देश में अहिंसा का साम्राज्य स्थापित हो सकता है। अणुव्रत का भी उद्देश्य यही है।

आचार्यश्री ने धन की प्राप्ति और आधुनिक सुख सुविधाओं को संग्रहित करने के लिए की जा रही क्रिया को भी हिंसा का एक कारण बताते हुए कहा कि आज समाज में काम वासना की पूर्ति के लिए व्यक्ति युवती और महिला का अपहरण करने से भी नहीं चूक रहा है और इच्छा खत्म करने के बाद उसकी हत्या तक कर देने में नहीं हिचकिचाता। उसके साथ हिंसा, दुराचार करता है। इस पर अंकुश लगाए जाने की आवश्यकता है। कई व्यक्ति सत्ता प्राप्ति के लिए भी हिंसा का सहारा लेते है और अपराध जगत की ओर अपने कदम बढा लेते है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ के समय अहिंसा के अनेक शिविरों में कई लोगों ने अहिंसा का प्रशिक्षण प्राप्त किया और हिंसा को छोडकर शांति का मार्ग प्रशस्त किया। आचार्यश्री भिक्षु हमेशा व्यक्ति का हृदय परिवर्तन करते थे। उसी की पुनरावृति आज के परिवेश में भी करने की आवश्यकता है। वर्तमान में हम देखते है कि घर–परिवार में भी हिंसा और झगडे का माहौल बन जाता है। पिता–पुत्र, पति–पत्नी के बीच कभी–कभी झगडा इतना विराट रुप ले लेता है कि वे एक दूसरे को मारने मरने पर उतारू हो जाते है। यह हिंसा का एक प्रकोप है। इस पर शांति के छींटे दिए जाने की आवश्यकता है।

अहिंसा का संस्कार पुष्ट हो

आचार्यश्री ने विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों को प्रारंभ से ही अहिंसा की जानकारी देने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि ऐसा करने से बच्चे में हिंसा के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न होगा। साथ ही युवा पीढी में भी अच्छे संस्कार का जन्म होगा। अहिंसा का प्रयोग जीवन में होना चाहिए। बच्चों को अहिंसा प्रशिक्षण और जीवन विज्ञान की शिक्षा देने की जरुरत है। इससे देश, समाज और परिवार का सर्वांगीन विकास संभव हो सकेगा।

जीवन का आधार है अहिंसा

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि व्यक्ति के जीवन में अहिंसा का अलग स्थान है। अन्य सभी नियमों का अपना स्थान है। हिंसा के सहारे व्यक्ति पूरे चौबीस घंटे समय व्यतीत

नहीं कर सकता। व्यक्ति इस तथ्य का आकलन करें कि वह दिनभर में कितने समय हिंसा की ओर रहता है। इसके बाद यह सामने आ जाएगा कि हम कुछ समय ही हिंसा में रहते है और अधिकांश समय अहिंसा में व्यतीत होता है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हिंसा के समय को भी हम अहिंसा में बदलने का प्रयास करें। हम मात्र कुछ घंटे ही हिंसा में रहने का परिणाम इतना भयानक रह सकता हैं। इसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल है। अहंकार, वासना, ईर्ष्यावश प्रवृति के रुप से उभरती है। अहिंसा का जीवन में उचित स्थान है। आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत का एक गीत बनाया था। इसे आगे बढाने की आवश्यकता है। अणुव्रत भी यही कहता है कि अहिंसा की शरण में जीवन जी रहे है। इसे छोडो मत।

उन्होंने गौतम बुद्ध का एक प्रसंग प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रायः अहिंसा ही जीतती आई है। हिंसा हमेशा असफल रहती है। हिंसा के भाव में मुस्कुराने की आवश्यकता है उसके बदले तमतमाने की आवश्यकता नहीं है। यह हिंसा का प्रतीक माना गया है। इसके लिए अहिंसा की आराधना करने की आवश्यकता है। हमें भगवान महावीर के अहिंसात्मक उपदेशों को अपनाना होगा।

अहिंसा से ही संभव है शांति

पूर्व गृहमंत्री एवं उदयपुर शहर विधायक गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि आज महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री का जन्म दिवस है। महात्मा गांधी ने आजादी की लडाई अहिंसा के मार्ग पर चलकर लडी और इसका परिणाम भी सामने आया। आज हिंसा के माध्यम से कुछ हासिल होने वाला नहीं है। अहिंसा का मार्ग हम अपनाएंगे तो उसके परिणाम भी अच्छे सामने आएंगे। हिंसा का प्रमुख कारण व्यक्ति में भोगवादी प्रवृति को होना है। इस पर अंकुश रहेगा तो जीवन में आगे बढने का प्रयास सफल हो जाता है। उन्होंने कहा कि यह आने वाला समय बताएगा कि अहिंसा के माध्यम से ही विश्व में शांति का बिगुल बज सकता है। बस इसके लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, अणुव्रत महासमिति दिल्ली के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष बाबूलाल कोठारी ने भी विचार व्यक्त किए। मुनि विजयकुमार ने गीत प्रस्तुत किया। श्री डूंगरगढ के एजी मिशन स्कूल के विद्यार्थियों गीत का संगान किया। अणुव्रत समिति केलवा के अध्यक्ष मुकेश डी कोठारी ने आभार जताया।

स्वयं को पहचानने की विधि है प्रेक्षाध्यान

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

केलवाः 2 अक्टूबर

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल ने कहा कि प्रेक्षाध्यान स्वयं को जानने और पहचानने की विधि है। उक्त विचार उन्होंने यहां भिक्षु विहार में चल रहे प्रेक्षाध्यान शिविर के रात्रिकालीन सत्र में उपस्थित शिविरार्थियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि व्यक्ति प्रायः यही जानने का प्रयास करता है कि आप कहां, आप कौन और आप क्या कर रहे हो। कभी यह जानने की कोशिश नहीं करता कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं और कहां जाना है। व्यक्ति की इंद्रियां खुली है और वह इसमें डूबा रहता है। सुनना, देखना और सोना। इसके माध्यम से वह बाहर के सुख को देखता है, लेकिन वह तृप्त नहीं हो पाता। प्रारंभ में सुख और अंत में दुख की प्राप्ति होती है। यदि व्यक्ति जीवन देखना, सुनना और सीख को प्रियता–अप्रियता से न जोडे तो वह तटस्थ होकर सर्वेचित आनंद प्राप्त कर सकता है। उन्होंने प्रेक्षामुद्रा, स्वप्रेक्षा आदि का प्रयोग कर यह सिद्ध किया कि व्यक्ति वर्तमान में आकर आनंदपूर्ण जीवन जी सकता है। शरीर प्रेक्षा के प्रयोग के माध्यम से उन्होंने केवल शुद्ध चेतना का अनुभव कराया।

Photo By Bablu 9950520505

Photo By Bablu 9950520505

Photo By Bablu 9950520505

पावस प्रवास केलवा – 20
Photo By Bablu 9950520505

– 2011
Photo By Bablu 9950520505

– 2011
Photo By Bablu 9950520505

Photo By Bablu 9950520505

Photo By Bablu 9950520505

आत्मानुशासन का प्रयास आवश्यकः आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के तहत मनाया अनुशासन दिवस, आज अहिंसा दिवस के साथ होगा समापन, जैन विद्या दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को नवाजा

केलवाः 1 अक्टूबर

तेरापंथ धर्मसंघ के 11 वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि व्यक्ति स्वयं का दर्शन करने का प्रयास करता है वह अहिंसा को साध सकता है। मनुष्य इस तथ्य पर

चिंतन करने का प्रयास करें कि भले ही उसकी और दूसरों की देह में भिन्नता है, लेकिन आत्मा का स्वरुप एक ही है। मुझे स्वयं और दूसरों के सुख का समान दृष्टि से देखने की आवश्यकता है। इससे आत्मानुशासन की अनुभूति होगी। आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास के दौरान मनाए जा रहे अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अन्तर्गत शनिवार को अनुशासन दिवस पर उपस्थित श्रावक समाज को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने व्यक्ति से स्वयं पर स्वयं का अनुशासन करने का आह्वान करते हुए कहा कि अणुव्रत बुराईयों का दमन करने का बेहतर उपाय है। व्यक्ति को जीवन में बुराईयों का समूल दमन करने के लिए संयम के मार्ग पर चलने की आवश्यकता है। तेरापंथ धर्मसंघ में अणुव्रत के एक गीत का प्रायः संगान किया जाता है कि अपने का अपने से अनुशासन हो। इसका अभिप्रायः यह है कि पहले स्वयं के द्वारा स्वयं पर अनुशासन करने का प्रयास करो। यदि कोई प्रमाद करने का प्रयास करता है तो उसे दण्ड देने की कार्रवाई अवश्य हो अन्यथा उसका अनुसरण कोई दूसरा व्यक्ति भी करेगा और संगठन व संघ में अनुशासन का कोई स्थान नहीं रह सकेगा। तेरापंथ धर्म संघ में अनुशासनहीनता करने वालों के विरूद्ध कडी कार्रवाई करने का प्रावधान है। आचार्यश्री भिक्षु और आचार्यश्री जयाचार्य के काल को कठोर अनुशासन का समय भी माना जाता है। उन्होंने कहा कि जिस संगठन से जुडकर व्यक्ति हमेशा त्रुटियों का अनुसरण करता रहता है। उसका परिष्कार करने की प्रक्रिया भी आवश्यक है। इसके लिए अनुशासन भी जरूरी है। निज पर शासन फिर अनुशासन के सूत्र को आज के परिवेश में अपनाने की आवश्यकता है। जो अच्छा शिष्य होता है वह अच्छा गुरु भी बन सकता है और जिसमें अच्छे शिष्य के लक्षण नहीं है। उससे अच्छे गुरु की कल्पना करना व्यर्थ है। गुरु को अधिकार है कि वह अपने शिष्य को किसी भी तरह की गल्ती पर उलाहना दे सकता है। तेरापंथ जैन धर्म संघ में युवाचार्य का कार्यकाल प्रशिक्षण का समय होता है। गुरु के साथ रहकर वह इतना निपुण हो जाता है कि गुरु बनने के बाद उसे किसी तरह की परेशानी नहीं आती। वह संघ को अच्छे ढंग से चला सकता है। उन्होंने कहा कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है। किसी भी जनतांत्रिक शासन की सफलता अनुशासन और संयम पर निर्भर है। आज स्कूलों और ज्ञानशालाओं में संस्कार दिए जाते है। इसमें ओर अधिक व्यापकता की आवश्यकता है। इससे आने वाली पीढी संस्कारों से ओतप्रोत होगी।

उन्होंने कहा कि किसी दूसरे के अधीन रहकर उसके आदेशों की पालना करना कठिन है, लेकिन जो व्यक्ति इन कठिनाईयों से सामना कर लेता है वह जीवन में कभी असफल नहीं होता। आज तेरापंथ के अनेक साधु विदेशों में बैठे है। वे दूर रहकर भी एक ही आचार्य के निर्देशों की पालना कर रहे है। सब एक ही डोर में बंधे हुए है। अनुशासनहीनता के कारण यदि एक भी कट गया तो वह कहां जाकर गिरेगा। इसका अंदाजा लगाया जाना मुश्किल है। जीवन संयम और अनुशासन की डोर से बंधा रहे तो हमारा समुचित विकास हो सकता है।

अनुशासन में रहना ही सभ्यता

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि अनुशासन और विकास एक दूसरे से जुडे हुए है। अनुशासन है तो विकास स्वतः ही हो जाता है और इसका अभाव है तो विकास के पहिए थम जाते है। अनुशासन हर प्रक्रिया में आवश्यक है। ऋतुओं में भी देखा जाता है कि जब तक यह संयमित रहती है वातावरण अच्छा बना रहता है और किसी ने छेडछाड कर दी कि प्रलयकारी स्थिति बन जाती है। व्यक्ति में अनुशासन है तो समझों सबकुछ आ गया। इससे चारित्र का विकास होता है और मन और इंन्द्रियों पर नियंत्रण बना रहता है। अणुव्रत कहता है कि अनुशासन में व्यक्ति लाइन में चलने वाला हो जाता है। वह सभ्य, शिष्टता के उपक्रम से जीवन का निर्वाह करता है। अनुशासन भंग करना उपयोगी नहीं रहता।

समण संस्कृति संकाय
जैन विद्या दीक्षांत समारोह
आचार्य श्री महाश्रमण
हार्दिक अभि

आचार्य श्री महाश्रमण चतुर्मास
व्यवस्था समिति, केलवा-2011
हार्दिक अभिनन्दन

हार्दिक अभिनन्दन

संस्कारों का निर्माण करती है जैन विद्याः आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विद्या दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को नवाजा, प्रशस्ति पत्र और मैडल प्रदान किए

केलवाः 1 अक्टूबर

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि जैन विद्या संस्कारों के निर्माण में एक महत्वपूर्ण कडी है। आज के परिवेश में इसकी आवश्यकता भी है। युवा पीढी हमारे संस्कारों से विमुख न हो। इसके लिए जैन विद्या की शिक्षा देने की आवश्यकता है।

आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां तेरापंथ समवसरण में जैन विश्व भारती लाडनूं के शिक्षा विभाग समण संस्कृति संकाय की ओर से आयोजित जैन विद्या दीक्षांत समारोह में उपस्थित विद्यार्थियों और श्रावक समाज को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने ज्ञान को जीवन में आलोक बिखेरने वाला बताते हुए कहा कि आदमी में ज्ञान की परिणति होनी चाहिए। हमारे आचार शुद्ध और निर्मल बने रहे। इसकी आज के परिवेश में महत्ती आवश्यकता है। जैन विद्या समस्याओं और दुर्गनों से मुक्ति की शिक्षा है। आज अनेक विद्यार्थियों ने विज्ञ की उपाधि ग्रहण की। आगे इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि वे जैन समाज में उपासक–उपासिका बनने की दिशा में प्रयास करे। इससे भी आगे वक्ता और प्रवक्ता बनने का सुअवसर है। ज्ञान की गंगा तो शरीर में बह ही रही है। थोडा ओर प्रयास करें और जैन विद्या के सर्वव्यापीकरण की दिशा कार्य करें।

आचार्यश्री ने कहा कि जैन विद्या की परीक्षाओं में एक बात की ओर घ्यान देने की आवश्यकता है कि अच्छे अंक प्राप्त करने की लालसा में कोई परीक्षार्थी अनुचित साधनों का प्रयोग न करें। नकल करने की प्रवृति हमें पीछे की ओर धकेलती है। इसके प्रभावी नियंत्रण के लिए परीक्षार्थियों से इस तरह का संकल्प पत्र भरवाने की आवश्यकता है।

विवि का समारोह याद आ गया

आचार्यश्री ने कहा कि दीक्षांत समारोह की सादगी और गरिमा देखकर उन्हें विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित होने वाले दीक्षांत समारोह की याद आ गई। जिस तरह से विवि स्तर पर होने वाले समारोह में एक के बाद एक विद्यार्थी को मैडल और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है ठीक उसी तरह से यहां भी ऐसा ही हो रहा है।

सक्रियता से काम कर रहे मुनि जयंत

आचार्यश्री ने कहा कि समण संस्कृति संकाय के सह प्रभारी मुनि जयंतकुमार बडी सक्रियता से अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह कर रहे है। इसमें व्यापक बढोतरी की अपेक्षा है। वे समण संस्कृति के परिचायक बन गए है। आगे भी इसी तरह से उन्हें बढचढकर कार्य करने की आवश्यकता है।

विश्व शांति के विषय समाहित

संकाय के सहप्रभारी मुनि जयंतकुमार ने कहा कि जैन विद्या में विश्व शांति के विषय समाहित है। इसकी सफलता में कार्यकर्ता की सजगता महत्वपूर्ण है। हमारे ज्ञानार्थी भी एक सफल कडी के रुप में कार्य कर रहे है। यह मॅल्यता को समझकर और इसकी अर्हता अर्जित कर संस्कारों से परिपूर्ण होते है। आज अनेक ज्ञानार्थी आधुनिक संस्कृति से ओतप्रोत इस जिन्दगी में संस्कारों का ज्ञान अर्जित कर रहे है। यह बहुत बडी बात है। उन्होंने कहा कि जीवन व्यवहार में व्यापकता के योगदान के साथ मन में यकीन, चाहत और संकल्प पैदा करने की आवश्यकता है। श्रम, संयम और चिंतन की आवश्यकता है। संकाय के निदेशक पन्नालाल पुगलिया ने बताया कि दीक्षांत समारोह में जैन विद्या का 9 वर्षीय पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाले देशभर के 141 विद्यार्थियों को विज्ञ की उपाधि प्रदान की गई। साथ ही प्रत्येक वर्ष में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए। उन्होंने बताया कि विभिन्न विषयों में देशभर में अव्वल रहे 68 विद्यार्थियों को समारोह के दौरान सम्मानित किया गया। उन्होंने संकाय का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया कि 33 वर्ष की यात्रा पूरी कर चुके इस संकाय के माध्यम से अब तक कई प्रतिभाओं को सम्मानित किया जा चुका है। विद्यार्थियों को पुरस्कार विभागाधिपति रतनलाल चोपडा, निदेशक पुगलिया, प्रायोजक मालचंद बेंगानी, जैन विश्व भारती के सह मंत्री अरविंद गोटी ने प्रदान किए। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी व आंचलिक संयोजक रमेश मूथा ने स्वागत भाषण दिया। इस दौरान जैन विद्या कार्यशाला भाग तीन के परिणाम की प्रति और संकाय संस्कृति संकाय बुलेटिन को आचार्यश्री को भेंट किया गया। इस अवसर पर चैन्नई ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। संयोजन अशोक डूंगरवाल और श्रीमती सरिता सुराणा ने किया।

आत्मानुशासन का प्रयास आवश्यकः आचार्यश्री महाश्रमण
केलवा में चातुर्मास, अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के तहत मनाया अनुशासन दिवस, आज अहिंसा दिवस के साथ होगा समापन

केलवाः 1 अक्टूबर

तेरापंथ धर्मसंघ के 11 वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि व्यक्ति स्वयं का दर्शन करने का प्रयास करता है वह अहिंसा को साध सकता है। मनुष्य इस तथ्य पर चिंतन करने का प्रयास करें कि भले ही उसकी और दूसरों की देह में भिन्नता है, लेकिन आत्मा का स्वरुप एक ही है। मुझे स्वयं और दूसरों के सुख का समान दृष्टि से देखने की आवश्यकता है। इससे आत्मानुशासन की अनुभूति होगी। आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास के दौरान मनाए जा रहे अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अन्तर्गत शनिवार को अनुशासन दिवस पर उपस्थित श्रावक समाज को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने व्यक्ति से स्वयं पर स्वयं का अनुशासन करने का आह्वान करते हुए कहा कि अणुव्रत बुराईयों का दमन करने का बेहतर उपाय है। व्यक्ति को जीवन में बुराईयों का समूल दमन करने के लिए संयम के मार्ग पर चलने की आवश्यकता है। तेरापंथ धर्मसंघ में अणुव्रत के एक गीत का प्रायः संगान किया जाता है कि अपने का अपने से अनुशासन हो। इसका अभिप्रायः यह है कि पहले स्वयं के द्वारा स्वयं पर अनुशासन करने का प्रयास करो। यदि कोई प्रमाद करने का प्रयास करता है तो उसे दण्ड देने की कार्रवाई अवश्य हो अन्यथा उसका अनुसरण कोई दूसरा व्यक्ति भी करेगा और संगठन व संघ में अनुशासन का कोई स्थान नहीं रह सकेगा। तेरापंथ धर्म संघ में अनुशासनहीनता करने वालों के विरूद्ध कडी कार्रवाई करने का प्रावधान है। आचार्यश्री भिक्षु और आचार्यश्री जयाचार्य के काल को कठोर अनुशासन का समय भी माना जाता है। उन्होंने कहा कि जिस संगठन से जुडकर व्यक्ति हमेशा त्रुटियों का अनुसरण करता रहता है। उसका परिष्कार करने की प्रक्रिया भी आवश्यक है। इसके लिए अनुशासन भी जरूरी है। निज पर शासन फिर अनुशासन के सूत्र को आज के परिवेश में अपनाने की आवश्यकता है। जो अच्छा शिष्य होता है वह अच्छा गुरु भी बन सकता है और जिसमें अच्छे शिष्य के लक्षण नहीं है। उससे अच्छे गुरु की कल्पना करना व्यर्थ है। गुरु को अधिकार है कि वह अपने शिष्य को किसी भी तरह की गल्ती पर उलाहना दे सकता है। तेरापंथ जैन धर्म संघ में युवाचार्य का कार्यकाल प्रशिक्षण का समय होता है। गुरु के साथ रहकर वह इतना निपुण हो जाता है कि गुरु बनने के बाद उसे किसी तरह की परेशानी नहीं आती। वह संघ को अच्छे ढंग से चला सकता है। उन्होंने कहा कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है। किसी भी जनतांत्रिक शासन की सफलता अनुशासन और संयम पर निर्भर है। आज स्कूलों और ज्ञानशालाओं में संस्कार दिए

जाते है। इसमें ओर अधिक व्यापकता की आवश्यकता है। इससे आने वाली पीढी संस्कारों से ओतप्रोत होगी।
उन्होंने कहा कि किसी दूसरे के अधीन रहकर उसके आदेशों की पालना करना कठिन है, लेकिन जो व्यक्ति इन कठिनाईयों से सामना कर लेता है वह जीवन में कभी असफल नहीं होता। आज तेरापंथ के अनेक साधु विदेशों में बैठे है। वे दूर रहकर भी एक ही आचार्य के निर्देशों की पालना कर रहे है। सब एक ही डोर में बंधे हुए है। अनुशासनहीनता के कारण यदि एक भी कट गया तो वह कहां जाकर गिरेगा। इसका अंदाजा लगाया जाना मुश्किल है। जीवन संयम और अनुशासन की डोर से बंधा रहे तो हमारा समुचित विकास हो सकता है।

अनुशासन में रहना ही सभ्यता

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि अनुशासन और विकास एक दूसरे से जुडे हुए है। अनुशासन है तो विकास स्वतः ही हो जाता है और इसका अभाव है तो विकास के पहिए थम जाते है। अनुशासन हर प्रक्रिया में आवश्यक है। ऋतुओं में भी देखा जाता है कि जब तक यह संयमित रहती है वातावरण अच्छा बना रहता है और किसी ने छेडछाड कर दी कि प्रलयकारी स्थिति बन जाती है। व्यक्ति में अनुशासन है तो समझों सबकुछ आ गया। इससे चारित्र का विकास होता है और मन और इंन्द्रियों पर नियंत्रण बना रहता है। अणुव्रत कहता है कि अनुशासन में व्यक्ति लाइन में चलने वाला हो जाता है। वह सभ्य, शिष्टता के उपक्रम से जीवन का निर्वाह करता है। अनुशासन भंग करना उपयोगी नहीं रहता। इस अवसर पर मुनि उदितकुमार ने भी विचार व्यक्त किए। अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का समापन रविवार को अहिंसा दिवस मनाने के साथ होगा। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।